अथ नवमोऽध्यायः

नोम्मा ग्यान-बिग्यान-योग अद्धयाय

श्रीभगवानुवाच

इदं तु ते गुह्यतमं, प्रवक्ष्याम्यनसूयवे।
ज्ञानं विज्ञानसहितं, यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात्।। १

स्रीभगुवान् बोल्ले

(ग्यान बिग्ग्यान योग की प्रस्तावना)

'जग का धारण के कर होवै?', धर्म बिसै का ग्यान गुप्त यो।
धर्म विसै का आस्रै आत्मा, काया मैँ रह उस तैँ न्यारा।।
धर्मग्यान तैँ गुप्त अधिक सै, ग्यान जीव का, उस तैँ जादा।
'जीव'र परमात्मा एक्कै सैँ', ब्रह्मग्यान यो पाणा मुस्कल।।
यो तो तन्नै गुपत सबाँ तैँ, खोल कहूँगा, नाँ तैँ काड्डै।
दोस गुणाँ मैँ, जिग्ग्यासू सै, ब्रह्मग्यान जो बोल्ल्या पहल्याँ।।
आप्णै अनुभव 'विग्ग्यान'-सहित, जाण जिसै छूट्टैगा अर्जन।
कदे न सुभ उस जग-बन्धन तैँ।। १

राजविद्या राजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमम्।
प्रत्यक्षावगमं धर्म्यं सुसुखं कर्तुमव्ययम्।। २

राणी विद्या ग्यान्नाँ की या, तेज घणा सै इस का न्यारा।
रक्षा लायक जो बी होवै, उस की राणी सै या विद्या।।
सुद्ध स्वयम् अर सुद्ध करै जो, या विद्या सै उन मैँ आच्छी।
खुद का अनुभव इस तैँ हो सै, धारण करणै तैँ दूर नहीँ।।
भोत सरळ सै इस का करणा, बिगड़ै नाँ यो किस्सै तह्वियाँ।
अक्सै इस का फळ सै होन्दा।। २

अश्रद्दधानाः पुरुषा, धर्मस्यास्य परंतप।
अप्राप्य मां निवर्तन्ते, मृत्युसंसारवर्त्मनि।। ३

(सर्धा बिन माणस दुनियाँ मैँ भरमैँ)

सर्धा ना जो करदे माणस, सब का धारण करणै आळै।
इस आत्मग्यान के रूप'र फळ, होवैँ सैँ जो, उन मैँ अर्जन।
नाँ पा मन्नै वापस आवैँ, मरणा जिस मैँ लाग्ग्या है सै।
उस इस दुनियाँ कै रस्तै पै।। ३

मया ततमिदं सर्वं, जगदव्यक्तमूर्तिना।
मत्स्थानि सर्वभूतानि, न चाहं तेष्ववस्थितः।। ४

(ईस्स्वर नै सै दुनियाँ सिर जी)

मन्नै सिरजी सै अर व्याप्पी, या सारी दुनियाँ, जो मैँ नाँ।
इन्द्रियगोचर काया आळा, मुझ मैँ स्थित ये भूत सबी सैँ।
मैँ ए आत्मा उन सब का सूँ, नाँ ए उन मैँ आस्रित मैँ सूँ।। ४

न च मत्स्थानि भूतानि, पश्य मे योगमैश्वरम्।
भूतभृन्न च भूतस्थो, ममात्मा भूतभावनः।। ५

नाँ मेरे मैँ स्थित भूत सभी, अग्ग्यान जगत् का कारण हो सै।
ग्यानरूप नित आनँदमय मैँ, अग्ग्यान जगत् मुझ मैँ कैसे?।।
देख चतुरता मुझ ईस्सर की, भूत्ताँ नै यो धारै पोस्सै।
नाँ पर भूत्ताँ मैँ स्थित यो सै, नाँ अर भूत्ताँ मैँ घिर रहँदा।
मेरा आप्पा सत् चिद् आनँद, भूत्ताँ नै सत् स्थिति मैँ ल्यावै।। ५

यथाकाशस्थितो नित्यं, वायुः सर्वत्रगो महान्।
तथा सर्वाणि भूतानि, मत्स्थानीत्युपधारय।। ६

ज्यूँ नभ मैँ स्थित हवा हमेसा, बहँदी जाँदी सबै दिसा मैँ।
'महान्' समूचै नभ मैँ छावै, न्यूँ ए सारे भूत पदारथ।
'मुझ मैँ स्थित सैँ', यो निस्चै कर।। ६

सर्वभूतानि कौन्तेय, प्रकृतिं यान्ति मामिकाम्।
कल्पक्षये पुनस्तानि, कल्पादौ विसृजाम्यहम्।। ७

स्थावर जङ्गम स्थूल'र सूक्सम, सबी भूत सैँ कुन्ती के सुत।

त्रिगुणा मेरी माया मैँ वैँ, प्रलै समै मैँ जा कैँ मिलदे।
फेर उन्हैँ मैँ प्रगट करूँ।। ७

प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य, विसृजामि पुनः पुनः।
भूतग्राममिमं कृत्स्नमवशं प्रकृतेर्वशात्।। ८

त्रिगुण सुभाव निजी अपणा कैँ, स्रिस्टी करदा फेर-फेर मैँ।
स्रिस्टी के इन सब घटकाँ की, जो सैँ बेबस तीन गुणाँ बस।। ८

न च मां तानि कर्माणि, निबध्नन्ति धनंजय।
उदासीनवदासीनमसक्तं तेषु कर्मसु।। ९

नाँ मन्नै वैँ करम बाँधदे, रण मैँ धन जीत्तणिये अर्जन।
नदीवेग तैँ ऊप्पर हट कैँ, बैठ्ठ्यै नै ज्यूँ उन कर्माँ मैँ।
आसक्तिरहित मन्नै नाँ वैँ, करम बाँधदे जग-नदिया के।। ९

मयाध्यक्षेण प्रकृतिः, सूयते सचराचरम्।
हेतुनानेन कौन्तेय, जगद् विपरिवर्तते।। १०

मैँ जो 'अध्यक्स' अधिस्ठाता, हेतु प्रक्रिति की चेस्टा का सूँ।
ऐसा मैँ जिब साक्सी होऊँ, प्रक्रिति रचै सै स्थावर चर नै।
इसै निमित कै कारण अर्जन, दुनियाँ नाँच्चै चक्करघिन्नी।। १०

अवजानन्ति मां मूढा, मानुषीं तनुमाश्रितम्।
परं भावमजानन्तो, मम भूतमहेश्वरम्।। ११

(अग्ग्यान-मार्ग)

हळ्का लेँ सैँ मन्नै मूरख, मानव काया बड़ बैठ्ठ्यै नै।
उत्तम रूप न मेरा जाणै, सब भूत्ताँ कै परमेसर का।। ११

मोघाशा मोघकर्माणो, मोघज्ञाना विचेतसः।
राक्षसीमासुरीं चैव, प्रकृतिं मोहिनीं श्रिताः।। १२

'मोघ' निरर्थक आसा आळे, व्यर्थ करम जो करदे रहँदे।
व्यर्थ निरर्थक जाणन आळे, इत-उत भाज्ज्यै मानस आळे।।
उन 'राक्षस' जन अर 'असुराँ' की, असुआँ मैँ, प्राणेन्द्रिय-धारी।

काया मैँ रमड़े मस्त रहैँ, इस तह्रियाँ के लोग्गाँ की जो।।
व्रित्ति आसुरी मोहित रहँदी, अर मोहित करदी, भरमाँदी।
उस का वैँ सैँ आस्रै लेँदैँ।। १२

महात्मानस्तु मां पार्थ, दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः।
भजन्त्यनन्यमनसो, ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम्।। १३

(भगती मारग के साधक)

'महत्' सुपूजित आत्मा आळे, उदार-मना जन, पूत प्रिथा के।
दिव्य, प्रकासित, ग्यानविभासित, शम, दम, श्रद्धा ओर दया-से।।
सात्त्विक गुण सुभाव मैँ जिन कै, ओर कितै नाँ मन नै लाँदे।
भूत्ताँ के मूळ'र अविकारी, मन्नै जाण भजैँ सैँ मन्नै।
मेरै आस्रित हो ज्याँ सैँ वैँ।। १३

सततं कीर्तयन्तो मां, यतन्तश्च दृढव्रताः।
नमस्यन्तश्च मां भक्त्या, नित्ययुक्ता उपासते।।१४

सदा गुणाँ नै गाँदे मेरे, रोक चित्त की व्रित्ती सारी।
सत्य-अहिंसा-शम-दम-धृति-से, गुण अपणानै का जतन करैँ।।
मजबूती तैँ नेम पाळदे, नमदे तन-मन अर वाणी तैँ।
सदा रोक कैँ चित्तव्रित्तियाँ, भक्ती तैँ मेरै निकट रहैँ।। १४

ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये, यजन्तो मामुपासते।
एकत्वेन पृथक्त्वेन, बहुधा विश्वतोमुखम्।। १५

(ग्यान यग्ग्य तैँ दूज्जै पूज्जैँ)

आत्मग्यान की अग्नी मैँ अर, अग्ग्यान होम कैँ बी कोए।
एक रूप मैँ, अलग-अलग या, भोत तह्राँ सैँ बिस्व रूप मैँ।
पूजा करदे मन्नै सेवैँ।। १५

अहं क्रतुरहं यज्ञः, स्वधाऽहमहमौषधम्।
मन्त्रोऽहमहमेवाज्यमहमग्निरहं हुतम्।। १६

(सब कुछ परमात्मा ए सै)

मैँ सङ्कल्प करम सूँ अर सूँ, स्रौत स्मार्त यग भी मैँ अर्जन।
'स्वधा' पिण्ड मैँ पितराँ खात्तर, मैँ ए अन्न सबै जो खावैँ।।
'मन्त्र' मनन कर त्राण करै जो, ऋसि मुनियाँ नै सबद उचार्‌या।
मैँ सूँ वो अर घी बी मैँ सूँ, अग्नी नै जो दीस्त करै सै।
अग्नी मैँ सूँ, मैँ ए आहुति, होम क्रिया न्यूँ सारी मैँ सूँ।। १६

पिताऽहममस्य जगतो, माता धाता पितामहः।
वेद्यं पवित्रमोङ्कार, ऋक् साम यजुरेव च।।१७

बीज बोणियाँ अर पालक सूँ, इस दुनियाँ की माँ, अर धारक।
बड़क्याँ का बी बड़का दाद्दा, जाणन-जोग्गा अर साधण मैँ।।
सुद्ध स्वयं मैँ ओर करणियाँ, 'ओम' सबद मैँ 'पर' ततव कह्वै।
'ऋचा' पद्यमय मन्त्र स्वयं मैँ, सा-रे-गा-मा-पा-धा-नी तैँ।।
गाया जाँदा साम ओर मैँ, गद्यविधा मैँ रचना बी मैँ।
वाङ्मय सारा भोत तह्राँ का, स्तुति, गाणा अर करम-विधायक।।
देव प्रकासित ओर प्रकासक, जो हौँ सैँ, उन नै पूज्जण नै।
जड़ अर चेतन साधण भोत्ते, कट्ठे कर कैँ त्याग समर्पण।।
होम यग्य यो जिन सबदाँ तैँ, गद्य रूप मैँ करदे माणस।
मैँ ए अर्जन, सूँ यो सारा, होगा बी जो आग्गै न्यारा।। १७

गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी, निवासः शरणं सुहृत्।
प्रभवः प्रलयः स्थानं, निधानं बीजमव्ययम्।। १८

'गति' मैँ जाणा, गम्य लक्ष्य फळ, सब का मैँ ए अर्जन होऊँ।
धारक, पोसक कर्मफळाँ तैँ, स्वामी बी मैँ, साक्सी बी मैँ।।
निस्क्रिय देक्खूँ सङ्गरहित हो, वास-भवन मैँ सब का सूँ अर।
कस्ट पड़्याँ नै सरण देणियाँ, भला चाँहदा सदा सबै का।।
मित्तर प्यारा परम सनेही, मैँ ए अर्जन, जलम देणिया।
मुझ मैँ जा कैँ सबै समावैँ, टिकदे बी सब मेरे मैँ ए।।
कुठला करमफळाँ का मैँ सूँ, नस्ट न होवै दुनिया रहँदे।

इसा बीज इस दुनियाँ का सूँ।। १८

तपाम्यहमहं वर्षं, निगृह्णाम्युत्सृजामि च।
अमृतं चैव मृत्युश्च, सदसच्चाहमर्जुन।। १९

गर्मी करदा सूरज बण मैँ, बर्खा रोक्कूँ आठ महीने।
ओर करूँ मैँ जल की स्रिस्टी, अमर भाव मैँ देवाँ का सूँ।।
म्रित्यू सूँ मैँ मरणाळयाँ का, 'सत्' जो सै अर आच्छा बी सै।
'असद्' रहै नाँ, ओर बुरा सै, वो बी अर्जन, मैँ ए सूँ रै।। १९

त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापा, यज्ञैरिष्ट्वा स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते।
ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोकमश्नन्ति दिव्यान् दिवि देवभोगान्।। २०

(तीन बेद के जाणनिये, आन्दे जान्दे जग मैँ रहँदे)

पद्य, गीत, अर गद्य रूप मैँ, तीन तह्याँ की वाणी द्वारा।
ग्यान प्रकासित 'वेद' कुहावै, 'रिचा', 'साम' अर 'यजुर्' नाम तैँ।।
इस नै जाणनियेँ जो ग्यानी, सोमयाग कर सोम पीणिये।
प्रभु नै अर्पित कर फिर उस का, आनँद लेँदे कर्मां नै कर।।
सोमपान तैँ पापरहित हो, यग्याँ द्वारा देव पूज कैँ।
सुखमय गति की करैँ प्राथना, पुण्याँ कै फळ इन्द्रलोक नै।
पा कैँ भोग्गैँ देवलोक मैँ, पावैँ दुर्लभ भोग सुराँ के।। २०

ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं, क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति।
एवं त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना, गतागतं कामकामा लभन्ते।। २१

वैँ उस देस काळ मैँ फैल्ल्यै, भोग सुरग नै, सुखमय गति नै।
पुण्य खतम जिब उन के हो ज्याँ, मरणा जित निस्चित हो सै उस।।
मरद्याँ की दुनियाँ मैँ आवै, न्यूँ तीन्नूँ बेद्दाँ मैँ बोल्ले।
रिसियाँ, मुनियाँ, सन्ताँ द्वारा, गद्य, पद्य अर गा कैँ बोल्ले।।
दुनियाँ जिस तैँ टिकी रहै या, आप्णै करतब तैँ गिर माणस।
इस नै दुखमै बणा न देवै, उन कै बोल्ले धरम मार्ग पै।।
चाल्लणिये जन बिसै चाहँदे, एक जूण तैँ ओर जूण मैँ।

जाणा-आणा पाया करदे।। २१

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां, ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां, योगक्षेमं वहाम्यहम्।। २२

(भगताँ का मैँ बोझ उठाऊँ)

ओर किसै कै आस्रित नाँ हो, चिन्तन करदे मेरा जो जन।
सरणागत हो मेरै बैट्ठे, सदा ध्यान वैँ मेरा करदे।।
उन कै योग छेम नै धारूँ, जिस की उन कै कमी रहै सै।
पूरी करदा वा मैँ उन की, जो सै उन कै धोरै, उस की।।
देखभाळ अर रक्सा करदा, बामन बण ज्यूँ छोट्टा, बोन्ना।
करी बली की रच्छा कद्दे।। २२

येऽप्यन्यदेवता भक्ता, यजन्ते श्रद्धयाऽन्विताः।
तेऽपि मामेव कौन्तेय, यजन्त्यविधिपूर्वकम्।। २३

(भगत ओर के बी मेरे ए सैँ)

जो बी भक्ती अन्य देव की, करदे माणस पूज्जैँ उन नै।
सर्धा उन मैँ रखदे भोत्ती, वैँ भी मन्नै ए कुन्तीसुत।
पूज्जैँ सैँ पर बिना बिधी कै।। २३

अहं हि सर्वयज्ञानां, भोक्ता च प्रभुरेव च।
न तु मामभिजानन्ति, तत्त्वेनातश्च्यवन्ति ते।। २४

मैँ क्यूँकी सब यग्याँ का अर, सारे पूज्जा-पाट्ठाँ का सूँ।
भोग करणियाँ अर मालिक बी, नाँ, पर, मन्नै जाणैँ वैँ सैँ।
'स्वरूप मेरा के?', 'मैँ के सूँ?', या नाँ जाणैँ, इस कै कारण।
सही राह नाँ चल उन का फळ, नाँ वैँ पा कैँ भटके फिरदे।। २४

यान्ति देवव्रता देवान्, पितॄन् यान्ति पितृव्रताः।
भूतानि यान्ति भूतेज्या, यान्ति मद्याजिनोऽपि माम्।। २५

जाँ देवाँ नै नेम-धरम तैँ, पूज्जणिये देवाँ नै सात्त्विक।
पितराँ नै जाँ रजोवृत्ति तैँ, धर्म गृहस्थी का पाळनिये।।

भूत-प्रेत-भैरू-चण्डी-से, तामस देवाँ नै जाँ तामस।
पसुबलि मदिरा तैँ जो पूज्जैँ, पावैँ मन्नै पूज्जणिये जन।
जावैँ मन्नै ए वैँ अर्जन।। २५

पत्रं पुष्पं फलं तोयं, यो मे भक्त्या प्रयच्छति।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः।। २६

(दिया भगति तैँ वो मैँ पाऊँ)

पान, फूल, फळ, जल जो मन्नै, प्रेम भाव तैँ अर्पण करदा।
वो मैँ भक्तिभाव तैँ अर्पित, स्वीकारूँ सूँ सुद्ध, नियन्त्रित।
आप्पै आळै जन का अर्जन।। २६

यत् करोषि यदश्नासि, यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत् तपस्यसि कौन्तेय, तत् कुरुष्व मदर्पणम्।। २७

(किमै करै, कर अर्पित मन्नै)

जो तैँ करदा, जो खाः सै, जो होम करै, देवै सै जो।
जो तप करदा भूख-प्यास अर, सर्दी-गर्मी सुख-दुख नै सह।
कुन्ती के हे पूत लाडले, वो कर दे तैँ मन्नै अर्पण।। २७

शुभाशुभफलैरेवं, मोक्ष्यसे कर्मबन्धनैः।
संन्यासयोगयुक्तात्मा विमुक्तो मामुपैष्यसि।। २८

आच्छे-भूण्डे फळ आळे न्यूँ, छूट्टेगा तैँ कर्माँ कारण।
होणै आळे सब फन्द्याँ तैँ, मेरे ऊप्पर त्याग कर्याँ नै।।
करदा चळदा सध्यै चित्त तैँ, छूट्टेगा 'मैँ' अर 'ममता' तैँ।
प्रारब्ध देह मैँ रहँदा तैँ, इस तैँ छूट्टया मन्नै पाः गा।। २८

समोऽहं सर्वभूतेषु, न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः।
ये भजन्ति तु मां भक्त्या, मयि ते तेषु चाप्यहम्।। २९

(सब सैँ मन्नै, एक जिसै ए)

एक जिसा सूँ सब भूत्ताँ प्रति, नाँ मेरा दुस्मन नाँ प्यारा।
जो सेवैँ मन्नै भक्ती तैँ, मेरै मैँ वैँ, उन मैँ मैँ सूँ।। २९

अपि चेत्सुदुराचारो, भजते मामन्यभाक्।
साधुरेव स मन्तव्यः, सम्यग्व्यवसितो हि सः।। ३०

(उद्धार करूँ मैँ पाप्पी का बी)

जै हो कोए भोत कुकरमी, सरण पड़्या हो मेरे पाः आ।
ओर किसै की सरण न जावै, आच्छा माणस मान्नो उस नै।
सही राह पै चाल पड़्या जो।। ३०

क्षिप्रं भवति धर्मात्मा, शश्वच्छान्तिं निगच्छति।
कौन्तेय प्रति जानीहि, न मे भक्तः प्रणश्यति।। ३१

जल्दी होवै धर्मात्मा वो, सदा रहै, वा सान्ती पावै।
कुन्ती के रै बेट्टे अर्जन, जाण सही तैँ आच्छी तह्नियाँ।
मेरा भगत न नस्ट कदे हो।। ३१

मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य, येऽपि स्युः पापयोनयः।
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्, तेऽपि यान्ति परां गतिम्।। ३२

मेरा, क्यूँकी, आस्रै ले कैँ, जो बी होवैँ पापसुभावी।
पाप भरी जो जूणी जलमैँ, जलमदोस तैँ पाप करणियै।।
पुरुसद्रिस्टि तैँ नीच्ची समझी, ओरत राक्खी भोग्गण खात्तर।
बैस्य, बाणिये, खेत्ती-बाड़ी, वणिज-तिजारत-पशुपालन-से।।
ब्याज, किराया, लेण-देण के, झूठ-साँच के काम करणिये।
सूद्र तथा जो पढण-लिखण तैँ, दूर रहणिये, मलिन व्रित्ति के।।
रहणी, सहणी, करणी माड़ी, मलिन क्रूर अविवेकी होवैँ।
मेरा आस्रै ले कैँ वैँ बी, पावैँ उत्तम गति सैँ अर्जन।। ३२

किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या, भक्ता राजर्षयस्तथा।
अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम्।। ३३

के फिर कहणा 'ब्रह्म' बेद मैँ, लोकग्यान मैँ ओर परात् पर।
'ब्रह्म' ततव मैँ लाग्गे रहँदे, उस नै समझैँ 'ब्राह्मण' उन सब।।
पुण्य करणिये सुद्ध पवित्तर, विप्राँ अर भक्ताँ का?।

झञ्झट आळे राजकाज-से, सात्त्विक राजस ज्यादा अर कम।।
तमोभाव मैँ लाग्गे रहँदे, राज-ठाठ मैँ, रह रिसियाँ-सी।
रहणी-सहणी करणाळ्याँ का, मेरै आस्रित, हो कैँ रहँदे।।
ये तो उत्तम गति पाँवैँ ए, नस्वर, दुखमय, सुख नाँ जिस मैँ।
वा या दुनियाँ पा कैँ अर्जन, सरणागत तैँ हो ज्या मेरै।। ३३

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः।। ३४

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञान-विज्ञान-योगो नाम नवमोऽध्यायः।।९।।

(तैँ मेरी सरणै आ ज्या)

मेरै मैँ मन आप्णा थिर कर, बण मेरा भगत, सरण मैँ आ।
मेरी पूजा, आप्णा, आप्पा, मन्नै अर्पित कर मन वाणी।।
काया तैँ मेरै प्रति नम ज्या, मन्नै ए तैँ पावै गा न्यूँ।
जोड़ स्वयं नै मुझ पै पूरा, हो कैँ आस्रित रै तैँ अर्जन।। ३४

स्रीमती सीत्तादेब्बी अर स्रीस्रीनिवास सास्तरी कै बेट्टै सिवनारायण सास्तरी कै हरियाणी भास्सा कै गीत्तायन काब्ब्यभास्य मैँ नोम्मा अध्याय पूरा होया।। ९।।

पूर्वसलोकयोग ३३८ + ३४ = ३७२